

संत रज्जब के साहित्य में जाति और अहं का तिरोभाव: एक विश्लेषण

डॉ. रीना श्रीमाली

स्वतंत्र शोधकर्ता, उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

भारतभूमि भक्ति के आधार पर विश्व के लिए प्रेरणादायी रही है। हमारे भारतीय जीवन मूल्यों पर विचार करे तो हम वसुधैव कुटुम्बकम्, जियो और जीनें दो के भाव अनायास नहीं आए हैं। इन सबके पीछे भारत की संत परंपरा, शास्त्र संमत आध्यात्म रहा हैं। देश में फेले अंधविश्वास, पाखंड व धार्मिक उन्माद को दबाने का सहारा भक्ति बनी। महान संत रामानंद व उनके शिष्यों ने भक्ति को दक्षिण से लगभग सम्पूर्ण भारत में आंदोलन के रूप में खड़ा किया।

स्वर्णकाल भक्तिकाल को साहित्य में निर्गुण और सगुण काव्यधारा में बांटा गया है। निर्गुण काव्य को संत काव्य कहा गया। जिसके प्रतिनिधि कवि कबीर हैं। दादूदयाल, गुरुनानक, नामदेव, सुन्दरदास, रैदास, धन्ना, मीरा ने निर्गुण भक्ति से की रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त अंधविश्वास, पाखंड, धार्मिक विभेद को समाप्त कर देश में प्रभावशाली आंदोलन खड़ा किया। भक्तिकालीन संतों की ईश्वर व गुरु के प्रति अटूट आस्था व श्रद्धा थी। उनका ईश्वर अजन्मा, निराकार व अन्तर्यामी जो कण-कण में व्याप्त है।

जाके मुंह माथा नाहि, नाहि रूप कुरुप। पुहुप वास तै पातरा ऐसा तत अनूप।¹

भक्तिकालीन संत साहित्य में अधिकतर संत कम पढ़े लिखे थे। कबीरदास की उक्ति 'मसि कागद छुआ नाहि, कलम गहि ना हाथ' केवल कबीर के लिए नहीं अपितु लगभग सभी संतों के लिए प्रयुक्त हुई है। फिर भी संतों ने अपने अनुभव व साधना से समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं का निराकरण कर हमारे लिए समाज सुधारक सिद्ध हुए। लगभग सभी संतों ने कबीर के चिंतन व वाणी का अनुसरण करते हुए लिखा है। जिसमें दादूदयाल व उनके शिष्य प्रमुख हैं।

मूल शब्द: रज्जब, भक्ति, दादू, अहं, जाति-पाँति, गुरु, सद्भाव, समाज, शिष्य

मूल आलेख

राजस्थान में कबीर के विचारों को आगे बढ़ाने का कार्य दादूदयाल व उनके शिष्यों ने किया। दादूदयाल के सबसे प्रतिभा संपन्न व प्रसिद्ध संत कवियों में रज्जब का प्रमुख स्थान है। दादूदयाल के प्रमुख शिष्यों में रज्जब ज्येष्ठ व विद्वान थे। अनेक विद्वानों का मत है उनके जन्म वि. स. 1624 ई. में पटान वंश में हुआ। उनके पिता सैनिक थे। आमेर में विवाह करने जाते समय दादू से सम्पर्क हुआ। और वही दादू का शिष्यत्व ग्रहण किया। आजीवन दूल्हे के वेश में रहकर भक्ति की। दादूदयाल के विभिन्न स्थानों पर भ्रमण के दौरान हमेशा साथ रहते थे।

परशुराम चतुर्वेदी अपनी पुस्तक 'उत्तर भारत की संत परंपरा में इनको हिंदू धर्म के कल्लाल जाति का होना बताते हैं। लेकिन रज्जब के पिता आमेर राजा की सेना में सेनापति थे। उन्हें पटान जाति का बताया है। बचपन से ही अखाड़ों में जाकर कसरत करने का शौक था। वे अच्छे पहलवान थे। उनका शरीर बलिष्ठ व सुगठित था।

बचपन से ही आसपास के दादूदयाल के द्वारों में जाना उनके स्वभाव में था। रज्जब भारतीय संत परंपरा के सर्वश्रेष्ठ संत कवि थे। जिन्होंने जीवन में गुरु भक्ति, सच्चा संत का आदर्श, स्नेहभाव, त्याग, निष्काम भक्ति के जो उदाहरण प्रस्तुत किए परवर्ती काव्य पर उनका प्रभाव परिलक्षित होता है। उनके जीवन से प्रभावित होकर शिष्य बने जिसमें गोविन्द दास, रामदास, हरिदास, कल्याण दास, बनवारीदास, मोहनदास प्रमुख थे। इनकी शिष्य परंपरा रज्जबावत कहलायी।

दादूदयाल के शिष्य सुंदरदास भी रज्जब के अभिभावकत्व में पढ़े। जब ने दादूदयाल की वाणी को अंग-बधू नाम से संग्रहित किया। दादूदयाल के शिष्य सुंदरदास भी रज्जब के अभिभावकत्व में पढ़े। रज्जब ने दादूदयाल की वाणी को अंग-बधू नाम से संग्रहित किया।

इस प्रकार रज्जब का साहित्य व जीवन से संबंधित रज्जब की दो कृतियाँ प्रसिद्ध हैं— 1. रज्जब वाणी, 2. रज्जब सरवंगी।

निर्गुण भक्ति में दादूदयाल की शिष्यों में संत रज्जब का साहित्य व उनके जीवन आचरण युगानुरूप है।

रज्जब वाणी जो रज्जब साहित्य के कलापक्ष के रूप में जानी जाती है। इसमें साखी, दोहा, सवैया, छप्पय आदि विविध विषयों का पहुँच के साथ वर्णन है। उनकी भाषा ढूँढ़ाड़ी मिश्रित राजस्थानी जो पिंगल के भी नजदीक है, उन्होंने अपने पदों को विभिन्न अंगों व रागों में बाँटा।

रज्जब सरबंगी इनका विशाल संग्रह ग्रंथ है, जिसमें विभिन्न संतों के मतों का अपने विषय व प्रसंगानुसार समावेश किया है। सरबंगी की प्रतियाँ आज सहज रूप से उपलब्ध हो जाती हैं। इनके साहित्य में आज विश्व की ज्वलंत समस्याओं का समाधान झलकता है। रज्जब का साहित्य केवल परिस्थितिजन्य नहीं अपितु युगानुरूप प्रासंगिक है। जिसमें गिरते जीवन मूल्यों भारतीय संस्कारों व सामाजिक रिश्तों पर मूल्यांकन हुआ है।

जाति-पाँति का विरोध

वर्तमान में देश की प्रमुख समस्या है, जातिवाद। हमने जाति आधारित देवी-देवता और यहाँ तक कि राजनीतिक लोगों को भी बाँट दिया है। रज्जब ने विभिन्न भक्ति के तरीकों को प्रतिपादित करते हुए कहा है कि परमात्मा अपने भक्त की जाति नहीं देखते हैं। किसी भी जाति का व्यक्ति ईश्वर का भक्त हो सकता है और परमात्मा इनकी भक्ति के कारण अवश्य दया करते हैं। वे नामदेव, कबीर, रैदास, मीरा व दादू का उदाहरण देकर कहते हैं कि—

जाति जगद्गुरु देखे नाहीं। मिलहिं प्राण पति प्रीति हि मांदि॥

नाम कबीर दादू जन तारे, नाम नेह नौ खंड उजियारे॥

सदना सेन अरु किता थोरी, हरि हित सीझे हैं कुल कोरी॥

आदि जैदेव अंत रैदासा, भाव भक्ति काटे कर्म फासा॥

जन रज्जब करुणामम केशों, प्रेम नेम भजि भानि अंदेशों॥²

आधुनिक साहित्यकार भारतीय संस्कृति के ताने-बाने को समझे बिना निजी स्वार्थों या किसी विचारधारा के पोषण के लिए तथ्यहीन साहित्य को समाज में परोसने का कार्य करते हुए नजर आते हैं। विशेषकर स्त्री व दलित विमर्श को तोड़ मरोड़कर पेश किया जाता है। वे राम को दलित व स्त्री विरोधी होना तो प्रस्तुत करते हैं लेकिन शबरी व स्त्री जाति के लिए किए गए कार्य को भूल को भूल जाते हैं। इन साहित्यकारों और इस विषरूपी समस्या का समाधान रज्जब का साहित्य है। 'रज्जब सरबंगी' में लिखते हुए ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल कहते हैं कि—

राम कृष्ण औतार लिया, भोजन किया अपार।
इक सिवरी एक विदूर घर, धापै तोदे चार।।
सिवरी जाति भीलनि भाया, लछमन राम लुटि फल खाया।
सलिला सुध पी ब्राह्मण जीया, वे ही जल निज रघुवर पीया।
वालमिकी भा भील सु भवना, रामायण सत् कोटि सु रचना।।³

इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि रज्जब का साहित्य महापुरुषों के सर्वस्पर्शी जीवन को चरितार्थ करता हुआ जातिवाद से परे है। वे स्पष्ट करते हैं मनुष्य को अच्छे कुल में जन्म से नहीं अपितु अच्छे कर्म से महान बनता है। वे लिखते हैं—

बहु का जन्म नीच कुल भा हैं। शील उपास्य मोक्ष पद गा है।।
या पख पूर्व जनन की जानूँ। कलजुग का जन फेरि पिछानूँ।।
आदि कबीर भजो बड भक्ता। दियो बस्त्र बालदि गृह रक्ता।।
चर्मकार गृह रैचर भइया। बहि गंगा उलटि द्विज नड्या।।
नामदेव भा भक्त सु भारी। छीपा कुल की छोति निवारी।।
पय प्रभु पायौ गऊ जिवाई। मंदिर फेरयो छान छवाई।।⁴

रज्जब के साहित्य से हमने पाया कि रज्जब के शिष्य हर जाति से संबंधित थे। रज्जब का द्वार हर जाति के लिए खुला था। एक बार स्वयं रज्जब के द्वारा गरीब जाति के युवक को अपने पास बिठाकर भोजन करवाया। वे बाद में गरीबदास के नाम से प्रसिद्ध हुए। जाति व्यवस्था राजनीति का विषय न होकर सामाजिक विषय है। इस समस्या का समाधान भी संत व उनका साहित्य है। रज्जब मानवता के सच्चे पुजारी थे। वे हिंदू-मुसलमान के विवाद को व्यर्थ मानते थे। समाज में व्याप्त जातिवाद, भेदभाव, धार्मिक अंधविश्वास आदि अनेक कुरीतियों की आलोचना की।

अहं का तिरोभाव

दादूदयाल के देवलोकगमन के बाद रज्जब ने आँखें बंद कर साधना की ओर प्रवृत्त हुए। कई भक्तों को समझाने पर वे कहते थे कि संसार में मुझे जो अनमोल वस्तु देखनी थी, उसके दर्शन हो गए। अब यह संसार निस्सार है लेकिन अधिक आग्रह पर वे केवल आवश्यकतानुसार आँखें खोलते और लेखन कार्य में लीन रहते। सर्वगुण संपन्न रज्जब को जीवन के हर पहलु का ज्ञान था। संत और दीन-दुखियों की हरसंभव सेवा व मदद करते थे। त्याग व विनम्रता हर संत का जीवन मूल्य रहा है। प्राचीन काल में राजा भी राज पाठ को छोड़कर संन्यासी बने हैं। लेकिन आज त्याग के नाम पर ढोंग व आडंबर रचे जाते हैं। त्याग की शक्ति अदृश्य है। विशुद्ध त्याग वहीं है जिसके पीछे अहंकार न हो। ईश्वर की प्राप्ति भी तभी संभव है जब अहंकार समाप्त हो जाए जब तक व्यक्ति अहंकारी रहेगा। तब तक परमात्मा प्राप्ति संभव नहीं।

जब मैं था तब हरी नहीं, अब हरि है मैं नहीं
सब अँधारा मिटी गया, जब दीप देखा माहि।।⁵

अतः अहंकार के नाश से ही ईश्वर प्राप्ति संभव है।

एक बार किसी विरक्त संत ने रज्जब के ठाट-बाट और राजसी वेश पर प्रश्न उठाया। कहा कि आपकी कीर्ति के अनुसार आपका त्याग नहीं है। विरक्त ने स्वयं के बारे में बताया कि मैं जूते नहीं पहनता, साधारण वेश में रहता हूँ, धन-दौलत नहीं रखता। तब रज्जब ने एक साखी को समझाते हुए कहा कि—

पसु भी पैसा नहीं गहै, नाहि पहनै पैजार।
रज्जब ऐसे त्याग से मिले न सिरजनहार।।⁶

भक्तिकाल में जातिगत संकीर्णता और बाह्याडम्बरों के कारण समाज का विकास अवरूद्ध हो रहा था। यद्यपि संतों के जीवन का उद्देश्य ईश्वर की भक्ति करना था तथापि उनके समय में समाज की जो दयनीय स्थिति थी और अज्ञानता के कारण भोली-भाली जनता का शोषण हो रहा था, उसे वे अनदेखा नहीं कर सके। समाज में फैली सामाजिक कुरीतियों एवं धार्मिक आडंबरों से लोगों को बाहर निकालने के लिए जीवन का सही रास्ता दिखाना आवश्यक था। जाति-पाँति के संकीर्ण भाव तथा बाह्याडम्बरों के द्वारा उस असीम व सर्वव्यापी ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती है, इसलिए सभी संतों ने इनका विरोध किया।

पाखंड एवं आडंबर का विरोध

संत साहित्य बाह्य आडंबरों का विरोध करता है। आडंबरों की अपेक्षा साधना से ईश्वर प्राप्ति पर बल देता है। मन के शोधन से ही ब्रह्म प्राप्ति संभव है। सदाचरण व निष्काम योग से ही मोक्ष प्राप्ति होती है। संत साहित्य जाति-पाँति का विरोध करता नजर आता है।

जाति सद्गुरु देखे नाहि, मिलहि प्राण पति प्रीति ही मांहि।⁷

अतः रज्जब की दृष्टि व्यापक थी। वे विशेष व सामान्य जन में कोई भेद नहीं करते थे। अतः मानवीय प्रेम के पक्षधर थे। वे जातीय आधार पर बड़ी हुई खाई को मानवीय प्रेम के आधार पर पाटना चाहते थे। अपने विभिन्न सामाजिक दायित्वों को वे ईमानदारी से निर्वहन करते हैं। सामाजिक समरसता की अनूठी पहल रज्जब साहित्य में भी दिखलाई पड़ती है।

संत रज्जब का साहित्य मानवीय मूल्यों की स्थापना का भरसक प्रयास करता है। प्रेम का प्रतिष्ठा कर अहंकार त्यागने का संदेश देता है। दया धर्म पर बल देते हुए केवल मनुष्य ही नहीं अपितु पशु-पक्षी, पेड़-पौधों के प्रति दया भाव का आह्वान करता है। एक-दूसरे मतों के प्रति सद्भाव व सम्मान जैसे मानवीय मूल्य भी रज्जब साहित्य में देखे जा सकते हैं। वर्तमान में हो रहे धार्मिक उन्माद में रज्जब का साहित्य देश को शांतिपूर्ण सहअस्तित्व व सद्भाव की दिशा देता है। आवश्यकता है उसे पहचान कर अंतर्मन में उतारने की। रज्जब का साहित्य मनुष्य के आचरण में सभ्य व्यक्ति का सृजन करता है। रज्जब का आर्थिक दरिद्रता की पृष्ठभूमि में भी नैतिक समृद्धि उनके व्यक्तित्व का सबसे बड़ा आभूषण रहा है। नैतिक समृद्धि को उन्होंने अपने धार्मिक मूल्यों में सहजता से स्वीकारा है।

रज्जब साहित्य गुरु महिमा का वर्णन करने के साथ-साथ अहिंसा, सत्संगति, मनःपरिष्कार, सदाचार, निष्काम कर्म और समर्पण को महत्व देता है तथा धार्मिक आडंबरों का विरोध करता है। मूर्तिपूजा का खंडन करते हुए रज्जब ने अवतारवाद और बहुदेववाद में अनास्था व्यक्त की हैं। लौकिक बंधनों से न बंधकर परोपकार का भाव ही रज्जब का मूल संदेश है। आज इसकी महती आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नवीन नंदवाना रू दादूदयाल जीवन और साहित्य, मलिक एण्ड कम्पनी प्रकाशन, जयपुर, 2018, पृ. 14
2. नंदकिशोर पांडे रू संत रज्जब, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2014, पृ. 131
3. ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल रू रज्जब की सरबंगी, श्री दयाल ट्रेडर्स रायगढ़, 2010, पृ. 31
4. वही, पृ. 101
5. रामकिशोर शर्मारू कबीर ग्रंथावली, परचा को अंग, 5/35, पृ. 161
6. ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल रू रज्जब सरबंगी, श्री दयाल ट्रेडर्स रायगढ़, 2010, पृ. 101
7. नवीन नंदवाना समवेत, भारतीय भक्ति साहित्य विशेषांक, हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर, जून, 2016, पृ.45